
डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

लेखक - डॉ० रिक लिंडल
अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

विशिष्टता

पुरानी आत्मा ने बोलना जारी रखा. "तुम विशिष्ट हो. यह एक सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसके बारे में आज मैं तुम्हें विस्तार से बताऊंगा. तुम, बेशक, सहज ज्ञान से यह जानते हो कि तुम विशिष्ट हो, लेकिन रोजाना के जीवन में इसे तुम्हें अपनी चेतन जागरूकता में लाना होगा. सारा दिन अपने आपको इस तथ्य के बारे में अक्सर याद दिलाओ. इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि तुम्हें बदला नहीं जा सकता, क्योंकि तुम विशिष्ट हो. कोई भी उस विशिष्ट योगदान को बदल नहीं सकता जो तुम इस भौतिक संसार को देते हो. सभी मनुष्य विशिष्ट हैं, कोई भी एक समान नहीं है. वास्तव में, कभी भी एक जैसे दो मनुष्य नहीं हुए हैं, कभी भी, आदमी के इतिहास में - और भविष्य में कभी भी नहीं होंगे. हर समय यह याद रखना तुम्हारे लिये मौलिक है कि तुम विशिष्ट हो और, इसलिये, तुम्हारा अदल-बदल नहीं हो सकता.⁴⁷ उन्नति के लिये यह तुम्हारी मूल आस्था होनी चाहिये."

"ठीक है, मैं विशिष्ट हूँ और मेरा अदल-बदल नहीं हो सकता. मैं उसे अपना मन्त्र बना लूँगा."

तुम विशिष्ट हो और तुम्हारा अदल-बदल नहीं हो सकता .

"अच्छा विचार है. अगली अवधारणा का सम्बन्ध क्रिया से है. मैंने ब्रह्मांड में गतिविधि के लिये 'क्रिया' के बारे में पहले भी बताया था. लेकिन क्रिया का और भी व्यक्तिगत पहलू है, तुम्हारे रोजाना के जीवन के अनुसार."

क्रिया

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, “तुम पहले ही जानते हो कि तुमने धरती पर जीवनकाल बिताने का निर्णय अपनी आन्तरिक प्रकृति को जानने के लिये लिया था. तुम यह भी जानते हो कि यह तुम तब सीखते हो जब तुम अपने अंदर भावनाएं पैदा करते हो, तुम्हारे दूसरों के साथ पारस्परिक क्रिया के परिणाम स्वरूप. तुम यह भी जानते हो की तुम विशिष्ट हो. इन स्थितियों के साथ, यह निष्कर्ष निकलता है कि तुम्हारी अपने लिये सबसे मौलिक जिम्मेदारी (और दूसरों की ओर, क्योंकि वह तुमसे पारस्परिक क्रिया से सीखते हैं) अपने अवतरण के दौरान क्रिया करना है, या कार्यवाही करना है. अपने आप को एक फूल की तरह सोचो जो खिलता है. अपनी पंखुड़ियाँ खोलो, और जीवन को गले लगाओ. तुम्हारे पास, तुम जो भी जज्ब कर सकते हो उसके लिये, एक सीमित जीवनकाल है. इसलिये, कार्यवाही करो और बिना क्षमाशील हुए. तुम अपनी क्रियाओं से ही अपनी आंतरिक प्रकृति के बारे में सीख सकते हो. यह एक मूल आस्था होनी चाहिये.”

क्रिया करें. बिना क्षमाशील हुए वास्तविक बनें रहें.

“ठीक है. मैं विशिष्ट हूँ और मैं किसी और से बदला नहीं जा सकता हूँ, और मैं कार्यवाही करूँगा और बिना क्षमाशील हुए वास्तविक बना रहूँगा.”

“अच्छा है.”

“तब क्या होगा जब लोग मुझे पसंद न करें और मुझे आंके?”

“हमेशा ही ऐसे लोग होंगे जो तुम्हें पसंद करेंगे और ऐसे जो तुम्हें पसंद नहीं करेंगे. याद रखो, तुम विशिष्ट हो. एक दूसरे के लिये राय बना और आंकना लोगों के लिये स्वाभाविक है. मैं तुम्हें इन विषयों के बारे और बहुत कुछ बाद में बताऊँगा, इसलिये धैर्य रखो. अब के लिये, तुम्हें मेरी यही सलाह है: अपने बारे में राय मत बनाओ, इसे दूसरों पर छोड़ दो; यह सोचो की दूसरे लोग तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं उससे तुम्हारा कुछ लेना-देना नहीं है.”

रिक्की, हिचकिचा कर मुस्कराते हुए, बोला, “ठीक है, मैं उसकी कोशिश करूँगा.”

“अब, अगली अवधारणा एक दिलचस्प अवधारणा है. इसे मैं ‘संज्ञानात्मक विरोधाभास’ कहता हूँ.”

एक दिन से दूसरे दिन के लिये और एक चक्र से दूसरे चक्र के लिये न टालें, इस विश्वास में कि आप रहस्यों का पता लगाने में सफल होंगे जब आप संसार में अगले चक्र में लौट कर आयेंगे.

संज्ञानात्मक विरोधाभास

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, “तुम्हे याद होगा कि मैंने तुम्हे कल भौतिक विरोधाभास के बारे में थोड़ा सा बताया था, इस दृष्टिकोण से कि शरीर भौतिक अनुभवों को कैसे समझता है. विरोधाभास की एक और महत्वपूर्ण विशेषता का सम्बन्ध तुम्हारे विचारों की विशिष्टता से है. तुम जानते हो कि, क्योंकि तुम विशिष्ट हो, धरती पर किसी को भी बिल्कुल वैसे अनुभव नहीं हुए जैसे कि तुम्हे हुए थे, और इसलिये, किसी का भी दृष्टिकोण तुम्हारे जैसा नहीं है. इसलिये, यह निर्धारित है कि हरेक चीज के बारे में तुम्हारे विचार, रवैये, सुझाव, और व्यक्तिगत आस्थाएँ किसी तरीके से विशिष्ट हैं, और इसलिये वह दूसरों से भिन्न हैं.

“जैसा कि मैंने पहले कहा था, तुम धरती पर सीखने के लिये आये हो, और तुम्हारा उन सभी दूसरे मनुष्यों के साथ एक अव्यक्त समझौता है जिन्हें तुम स्वयं अपने आप को देते हो, जैसे कि वह अपने-आप को तुम्हे देते हैं. इसलिये, धरती पर तुम्हारी सबसे बुनियादी जिम्मेदारी अपनी विशिष्टता को संसार में धकेलना है. तुम्हारा योगदान दूसरों की सहायता करेगा, क्योंकि तुम्हारे विचार उनसे भिन्न हैं. यह इस विषमता के माध्यम से है कि वह अपने विचारों का मूल्यांकन कर सकें और अपनी विशिष्टता को समझें. दूसरे शब्दों में, अपने विचारों को कहने से और संप्रेषण से, तुम दूसरों के लिये मापदंड प्रदान करते हो जिन्हें वह अपने विचारों को निरूपित करने में प्रयोग कर सकें, उसके अनुसार कि वह तुम्हारे विचारों से कितने भिन्न हैं. क्या तुम्हे अब तक समझ में आ गया है?”

“हाँ, मैं समझ गया.”

“तुम्हे यह भी समझना चाहिये कि सबसे मौलिक स्तर पर, सभी मनुष्य समान रूप से मान्य होते हैं और सारे विचार और सुझाव समान रूप से मान्य होते हैं.⁴⁸ जिस संदर्भ में हम बात कर रहे हैं, उसके बारे में तुम्हारे लिये यह सोचना गलत होगा कि तुम्हारे विचार या सुझाव किसी दूसरे से बेहतर हैं या यह कि संसार में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से अधिक मान्य योगदान करता है.”

सभी मनुष्य समान रूप से मान्य होते हैं, और सभी विचार
और सुझाव समान रूप से मान्य होते हैं.

“और भी, अपने मन की बात कहते हुए इस कारण से न हिचकिचायें कि तुम यह सोचते हो कि तुम किसी चीज के बारे में गलत हो. कोई भी विचार या सुझाव ऐसा नहीं होता जो अपने-आप में ‘सही’ या ‘गलत’ होता हो.⁴⁹ लक्ष्य यह है कि एक समाधान पर पहुंचना है जो एक खास स्थिति के लिये पूर्णतया उपयुक्त है, और, परिणामस्वरूप, अत्यधिक सामंजस्य की ओर ले जाता है. इसलिये, उदाहरण

के लिये, एक ऐसी परिस्थिति में जहाँ एक मुद्दे पर निर्णय लेने की आवश्यकता है, यह हरेक अलग विचार का या सुझाव का योगदान है जो विषमता प्रदान करता है, लिहाजा विरोधी विचारों और सुझावों में विकास की प्रक्रिया के लिये रास्ता बनाना और एक मुद्दे पर सर्वसम्मति का विकास किया जाना जो एक दी गई परिस्थिति के लिये सबसे उत्तम है. यह महत्वपूर्ण नहीं है कि तुम्हारा योगदान एक 'सही' योगदान हो या उसके अनुसार हो जिस पर अंतिम मतैक्य है. इस मामले में एक 'गलत' विचार, या एक विचार जो उपयुक्त न हो, भी सामान रूप से मान्य है, क्योंकि इसके बिना, एक चर्चा कि यह किस वजह से उपयुक्त नहीं है नहीं हो सकता थी. और उसी मापदंड से, 'सबसे उत्तम' विचार, या सुझाव, का मूल्यांकन संभव नहीं हो पाता."

"अपनी बात कहना सबके लिये आसान नहीं है, विशेषतया तब जब उनकी आत्म-योग्यता शून्य हो. इसके बजाय वह अपनी बात कहे और दूसरों की नजर में आये, मेरा मित्र पीछे रहना पसंद करता है. बाद में, वह अपने मन की बात बोलने या टिप्पणी करने का अवसर खो देने लिये अपना तिरस्कार करता है."

"तुम सही हो. कईयों के लिये अपनी बात कहना बहुत मुश्किल होता है, अपने-आप में बिना क्षमाशील होने के लिये, और संसार में क्रिया करने के लिये, जो वास्तव में अपने जीवन का हिसाब देने के लिये उसकी अत्यंत मौलिक जिम्मेदारी है. कईयों को यह विश्वास करना मुश्किल होता है कि उनका योगदान उपयुक्त है. तुम्हारे मित्र के लिये मेरा एक सुझाव है जब वह अगली बार अपने-आप को ऐसी स्थिति में पाता है तो."

"ठीक है. वहा क्या है?"

"उसे इस बात पर ध्यान केन्द्रित करने के लिये कहो कि जो कुछ भी दूसरे व्यक्ति से कहता

48 विक्टर ई. फ्रान्कल. द विल्ल टू मीनिंग: फाउंडेशनस एंड एप्लीकेशन्स ऑफ लोकोथेरेपी. न्यू यॉर्क : पेंगुइन बुक्स, 1969

49 नेअले डोनाल्ड वेल्श. कन्वर्सेशनस विद गाँड. भाग 1. न्यू यॉर्क: पूतनम्स संस, 1996

है उसके लिये वह उसका एक उपहार है. एक विशिष्ट उपहार जो उसके द्वारा ही दिया जा सकता है, क्योंकि, वास्तव में वह विशिष्ट है. उसे इस कार्य में सहायता करने के लिये, उसे अपने पसंदीदा भोजन के बारे में सोचने के लिये कहो. उसका पसंदीदा खाना क्या है? वह कह सकता है, 'मुझे अपनी माँ के हाथ की स्पाघेट्टी पसंद है. यह सबसे उत्कृष्ट है!' फिर उसे कहो, अगली बार जब वह अपने मन की बात कहने में हिचकिचाये, तो यह कल्पना करे कि वह अपने दर्शकों को, या उस व्यक्ति को जिससे वह कर रहा है, अपनी माँ के हाथ की बनी स्पाघेट्टी दे रहा है. यह सबसे उत्कृष्ट स्पाघेट्टी है, यह उनके लिये उसका विशिष्ट उपहार है, और इसे किसी और चीज से बदला नहीं जा सकता.

जब वह अपनी हिचकिचाहट पर काबू पाने और अपनी बात बोलने का अभ्यास कर रहा होगा, बिना क्षमाशील हुए, तो यह उसकी सहायता करेगा."

रिक्की ने मुस्कराते हुए कहा, “वह मजेदार लगता है, लेकिन यह एक अच्छा सुझाव है. मैं उसे बताऊंगा.”

“अंत में, तुम्हें यह समझना होगा कि विरोधाभास के बारे में इस बातचीत को मुकाबले या शक्ति के साथ भ्रमित नहीं करना है. हमने जो चर्चा की है, उस सन्दर्भ में तुम्हारा लक्ष्य, इस प्रेरणा से आगे नहीं बढ़ना चाहिये कि तुम्हें किसी और से बेहतर होना है, या श्रेष्ठ होना है. और यह शक्ति या नियंत्रण पाने के लिये नहीं होना चाहिये. हम केवल विशिष्ट योगदानों के बारे में बात कर रहे हैं. उन्नति करने के लिये, तुम्हें अपनी विशिष्टता को और तुम्हारे विचार और सुझाव जो विरोधाभास दूसरों को प्रदान करते हैं उन्हें गले लगाना चाहिये. यह महत्वपूर्ण है कि इसे एक मूल आस्था की भांति स्थापित किया जाये.”

“ठीक है, मैं समझ गया. तुम मुझे प्रतिस्पर्धा या शक्ति के बारे में शिक्षित करने की कोशिश नहीं कर रहे हो.”

“वह सही है.”

रिक्की का कौतूहल धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था, क्योंकि भौतिक संसार को एक साथ लाये जाने का ढांचा, यह कैसे संचालित होता है, वह उसमें अपने अनुभव कैसे उत्पन्न करता है, और कैसे मूल आस्थाओं द्वारा निर्धारित किये गये विशेष साधन, कुछ व्यावहारिक अवधारणायें प्रदान करते हैं जिन्हें वह अपने रोजमर्रा के जीवन में इस्तेमाल कर सकता है.

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, “और भी है. अब मैं तुम्हें बुढ़ापे के बारे में बताऊंगा. भौतिक जीवन का एक और पहलू बूढ़ा होना है, अक्सर जिसे स्वीकार करने में लोगों को मुश्किल होती है.”

